संपादकीय

अपना आकाश तलाशने की जद्दोजहद

खुद से सीखने की प्रक्रिया थोड़ी लम्बी और जटिल होती है। मगर होती बहुत कारगर है। धीरे-धीरे सीखने वालों की प्रतिक्रियाओं का मतलब, महत्व और संघर्ष के आयाम दूसरों को भी बखूबी समझ आने लगते हैं। पिछले दिनों जनवादी महिला समिति द्वारा कैथल, भिवानी, हिसार, रोहतक में किए गए ग्रामीण महिलाओं के सम्मेलन में ये बातें बखूबी उभर कर आईं। सौभाग्य से इन सम्मेलनों में आज़ाद हिन्द फ़ौज की एकमात्र कैप्टन लक्ष्मी सहगल की बेटी सुभाषिणी अली सहगल भी साथ थीं। इन सम्मेलनों में अनेक गांव से आई महिलाओं द्वारा रखे गए विचारों का सार था : 'जी बहुत ज़्यादा परेशान हो गए, कोई सुनाई नहीं करता।'

तथाकथित विकास की दौड़ में पीछे छूट गई कम पढ़ी-लिखी परन्तु ठाढ़ी कमेरी इन महिलाओं को उनके साथ चल रहे सलूक ने एक तो यह जता दिया है कि थोड़ी अच्छी भाषा बोलने वाली, साफ़-सुथरे कपड़े पहनने वाली महिलाएं उनसे श्रेष्ठ होती हैं। क्योंकि तमाम समझाने के बावजूद उम्र में ज़्यादा ये महिलाएं हमें आदतन 'जी' कहकर ही संबोधित कर रही थीं। हरियाणा में ग्रामीण महिलाओं को उनकी विकास की ज़रूरतों के ईर्दगिर्द संगठित करने के प्रयास छिटपुट व बिखरे-बिखरे से हुए हैं। हरियाणा के पंचायत मंत्री तथाकथित पढ़ी-लिखी पंचायतों को कितने ही स्टार बांटते फिरें परन्तु इन महिलाओं से किसी पंचायती का दूर-दूर तक का संवाद नज़र नहीं आया। इस तरह से देखें तो जो महिलाएं बोल रही थीं, उन्होंने स्वयं खेतीबाड़ी, मेहनत-मजदूरी, गोबर-पानी, सेवा-पानी व पालन-पोषण करते हुए, जो देखा वही बयां किया।

गरीब तबके की महिलाएं मनरेगा में काम करती हैं और वे भी तब जब किसी ओर तरह से रोज़ी-रोटी चलाने का क़तई विकल्प न हो, क्योंकि सबसे हाड़ तोड़ काम इस योजना में कराया जाता है। मगर फिर भी इनकी मज़दूरी दो-दो साल की लटकी पड़ी है। पिछले क़रीब दस-बारह साल से नये राशन कार्ड नहीं बने, महंगाई इतनी ज़्यादा है तो परिवारों का पेट कैसे पालें। इस जानलेवा गर्मी में बिजली दो घण्टे आती है, उसका भी समय निश्चित नहीं, बच्चे रातभर सोने नहीं देते, पूरा दिन कैसे शरीर चले? पीने के पानी को लेकर हालत ऐसी कि जब गर्मी में ज़्यादा पानी की ज़रूरत पड़े तब पहले जितना भी न मिले। ऐसी स्थिति का लाभ प्राइवेट पानी ठेकेदार उठाते हैं।

इन सब पर भी पेट पर पट्टी बांधते हुए वे गाड़ी खींचने को तैयार हैं, परन्तु सबसे बड़ी समस्या है दारू पीने की। हाड़ तोड़ कर जो कुछ भी वे जुगाड़ने की कोशिश करती हैं, उसकी आदमी दारू पी जाते हैं, विरोध करें तो मारपीट। अब तो बच्चे व किशोर भी दुकानों से पाऊच लेकर नशा करते हैं। पंचायतों से गांव में दारू का ठेका न खोलने का प्रस्ताव अगर किसी तरह कहीं पास कराया तो सरकार ने मामूली मीन-मेख कर रिजेक्ट कर दिया। आज के दिन गांव में अगर कोई रौनक़ बची हुई है तो वह है दारू के ठेकों पर। बुज़ुर्गों, बच्चों की बीमारी, पशुओं की बीमारी स्वास्थ्य विभाग का बैठता ढर्रा। इन तमाम सहयोगी ढांचों के अभाव व उनसे जुड़ी पीड़ाएं ग्रामीण महिलाओं की दुखद तस्वीर को उकेर कर रख देती हैं।

सुबह सबसे पहले उठकर काम लगना व रात को सबसे बाद में खाट पकड़ना। शायद इसी वजह से 70 प्रतिशत महिलाओं व उनके गर्भ से पैदा होने वाले बच्चों में खून की कमी पाई जाती है। इस स्थिति से निपटने के लिए चलाई गई आंगनबाड़ी, आशा वर्कर, मदर ग्रुप, मिड-डे मील आदि योजनाओं में काम करने वाली महिलाओं को सरकारी कर्मचारी की तरह वेतन की बजाय मानदेय देकर स्वयं सरकार उनका शोषण कर रही है। 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' समेत अन्य जो भी योजनाएं महिला कल्याण के लिए चलाई जा रही हैं, उनका ज़्यादातर पैसा इनके विज्ञापनों, प्रचार-प्रसार, ब्रांड एम्बेसडरों पर लगता है। बहुत ही छोटा अंश पात्रों तक पहुंच पाता है। गांवों की नौजवान लड़कियां, जो खेलों में अच्छे नतीजे दे सकती हैं, दे रही हैं, उनके आसपास खेल सुविधाओं व अन्य आत्मविकास के मौक़ों का अभाव है। हक़ीक़त में तो उन्हें अपनी बात रखने के लिए कोई मंच ही उपलब्ध नहीं है।

ट्रंप की सनक से त्रस्त वैश्विक व्यवस्था

अब तक जी-7 संगठन की वार्षिक बैठकों में भाईचारा देखने को मिलता रहा है। इसमें शामिल विकसित अर्थव्यवस्थाओं का दुनियाभर के सकल घरेलू उत्पाद में 46 फीसदी हिस्सा बनता है। वैश्विक व्यवस्था बनाने में इस संगठन का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। लेकिन राष्ट्रपति ट्रंप ने इस महीने के शुरू में वैंकूवर में हुई बैठक में अपने व्यवहार से सौहार्दपूर्ण वातावरण को?भंग किया। इस शिखर वार्ता पर व्यापारिक संबंधों पर सुलग रहे तनाव की परछाई छाई रही, जिसमें अमेरिका ने एकतरफा कार्रवाई करते हुए जी-7 गुट के भागीदार सदस्य देशों से भी आयात होने वाले स्टील और एल्युमीनियम पर अतिरिक्त शुल्क लगा दिया। ट्रंप ने उस शिखर वार्ता घोषणापत्र को तिलांजलि दे दी, जिस पर उन्होंने पहले हस्ताक्षर कर दिए थे। और तो और कनाडा के प्रधानमंत्री ट्रुडो को 'बेईमान और कमजोर' ठहरा दिया। इससे क्षुब्ध होकर हालांकि गुट के यूरोपियन सदस्यों ने एकजुट होकर ट्रंप के बयानों का कड़ा संज्ञान लिया। वहीं जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे, जो पहले ही चीन और उत्तरी कोरिया के मामले पर ट्रंप के पूर्ववर्ती यू-टर्नों से हिले हुए हैं, उन्होंने अलबत्ता चुप रहना मुनासिब समझा।

दरअसल, ट्रंप के अप्रत्याशित स्वभाव और बदतमीज रवैये से न केवल उनके सहयोगियों को बल्कि दुनिया के तमाम देशों को झटका लगा है। उनके इस व्यवहार ने वैश्विक व्यवस्था को एक नाटकीय प्रपंच में तब्दील करके रख दिया है। उन्होंने आते ही 'अंतर-प्रशांत भागीदारी' (ट्रांस पैसिफिक पार्टनरशिप) में अमेरिकी सदस्यता छोड़ दी थी, जबकि इस मंच के माध्यम से एशिया-प्रशांत क्षेत्र की आर्थिकियों में सहयोग किया जाता रहा है। इसमें कनाडा-अमेरिका से लेकर जापान तक पड़ने वाले देशों के अलावा दक्षिण कोरिया और 'असियान' संगठन के सदस्य देश भी शामिल हैं। चीन अब अपने बृहद् आर्थिक सहयोग नामक नए मंच को आगे बढ़ाने में लगा है, इसके लिए वह 'असियान' संगठन के देशों के अतिरिक्त इसके संवाद-भागीदार सदस्यों जैसे कि भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया को भी साथ जोड़ना चाहता है। अमेरिका के नए निर्णयों से उसे आर्थिक दबदबा बढ़ाने में आसानी होगी। वैश्विक व्यवस्था को अस्थिर बनाने वाली ट्रंप की नीतियों में एक अन्य है 'उत्तर अमेरिका मुक्त व्यापार संधि' को निरस्त करने का उनका दृढ़ इरादा। इससे पहले उन्होंने छह मुस्लिम देशों से अमेरिका आने वाले लोगों पर प्रतिबंध लगाया था, ट्रंप ने ईरान पर भी एकतरफा निर्णय में परमाणु प्रतिबंध लगा दिए हैं। उन्होंने हैती और कुछ अफ्रीकी देशों को 'गोबर-देश' कहकर अपमानित किया है।

ट्रंप ने संपूर्ण येरुशलम शहर को बतौर इस्राइल की राजधानी मान्यता देकर वहां पहले से व्याप्त इस्राइली-फिलीस्तीनी तनाव में नया इजाफा और अनिश्चितता भर दी है, उन्होंने वैश्विक एकराय को नजरअंदाज किया है, जिसमें कहा गया है कि पूरबी येरुशलम फिलीस्तीनियों के अधिकार क्षेत्र में रहे। ट्रंप अपने प्रत्याशित स्वभाव के चलते अपने सहयोगी मुल्कों, दक्षिण कोरिया और जापान की सुरक्षा संबंधी चिंताओं को नजरअंदाज करते हुए वे सिंगापुर में उत्तर कोरियाई नेता किम जोंग से शिखर वार्ता की। ट्रंप और किम ने अपनी भेंट को 'बृहद्, गहरे और संजीदा विचार-विमर्शों के आदान-प्रदान' वाली ठहराया है।

अलौकिक का सम्मोहन

दिल्ली के बुराड़ी में एक ही परिवार के 11 लोगों की सामूहिक मौत में हर रोज नए-नए तथ्य सामने आ रहे हैं। लेकिन इसके कारणों को लेकर अभी कुछ अस्पष्टता बनी हुई है। पुलिस की मानें तो मामला तंत्र-मंत्र के ज्यादा नजदीक नजर आ रहा है, लेकिन मृतकों के रिश्तेदारों का मानना है कि यह हत्या है। अभी तक जितनी चीजें सामने आई हैं, उनमें वह डायरी ही सबसे अहम सबूत है, जिसमें घर का कोई सदस्य घरवालों की समस्याओं का समाधान लिखकर करता था। माना जा रहा है कि यह काम परिवार में ललित करता था, जिसकी मानसिक स्थिति डांवाडोल बताई जाती है। हालांकि मानसिक स्थिति उसके बड़े भाई भूपी की भी सही नहीं बताई जा रही।

परिजनों का कहना है कि दिल्ली का एक सामान्य परिवार जितना धार्मिक होता है, मरनेवाले लोग भी उतने ही धार्मिक थे। मगर मौके से बरामद डायरी बताती है कि इस परिवार के लोग तंत्र-मंत्र पर कहीं ज्यादा विश्वास करते थे। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के मुताबिक किसी की भी देह पर संघर्ष का कोई निशान नहीं मिला है, न ही पेट में कोई नशीला या जहरीला पदार्थ, जिससे लगे कि उनकी हत्या की गई होगी। परिवार का दूसरे नंबर का बेटा ललित ही घर के सभी छोटे-बड़े फैसले यह कहकर लिया करता था कि उसकी सीधे उसके पिता से बात होती रहती है, जिनकी मौत दस वर्ष पहले हो चुकी थी। घर का आर्थिक नियंत्रण भी उसी के हाथ में था, जिससे यह माना जा सकता है कि वह परिवार का शक्ति केंद्र था।

समझदारी आमतौर पर ताकत की गुलाम नहीं होती, लेकिन वास्तविक दुनिया में अक्सर इसका उलटा ही देखा जाता है। यहां जिसकी भी बात घर-परिवार में ज्यादा सुनी जाती है, अनजाने में लोग उसके ही पीछे चल पड़ते हैं। असल चीज समय पर ऐसे व्यक्तियों के विचलन की थाह लेने की है। आपको लगे कि अलौकिक या पारलौकिक चीजें किसी की सोच-समझ का ज्यादा स्पेस घेरने लगी हैं तो, उसकी हर बात पर हामी भरते जाने के बजाय अपने ठोस तर्कों से उसे परेशान करने का एक भी मौका हाथ से जाने न दें। एकबारगी मान लें कि अंधविश्वास लोगों को अंधा बना देता है, लेकिन जिन एकाध लोगों की भी आंखें खुली हैं, वे अंधविश्वासियों के सम्मोहन में न आएं तो कई लोगों की जान बच सकती हैं।

लगन से लक्ष्य

बनारस में नीरू व नीमा नामक जुलाहा दंपत्ति को लहरतारा नामक तालाब से एक बालक मिला। उन्होंने इसका नाम कबीर रखा। अपनी संतान समझकर इसका पालन-पोषण किया। कबीर की साधु-संतों के प्रति अगाध श्रद्धा थी। वह चाहता था कि संत रामानुजाचार्य से उन्हें ज्ञान मिले। शिष्य बनने हेतु वह बार-बार रामानुजाचार्य के पास जाता, लेकिन रामानुजाचार्य इन्हें अपना शिष्य नहीं बनाना चाहते थे। शिष्य बनने की लगन से एक दिन प्रातः मुंह अंधेरे कबीर गंगाजी के उस घाट पर जा पहुंचे जहां रामानुजाचार्य स्नान करते थे। उस दिन कबीर की सच्ची श्रद्धा को देखकर रामानुजाचार्य के मन में कबीर के प्रति प्यार उमड़ आया और कबीर को दीक्षा दे दी। सच्ची लगन और श्रद्धा-युक्त अग्रगण्य कबीर ने स्वयं के मन को भी और अपने गुरु रामानुजाचार्य के मन को भी जीत लिया था।

सवालों में जवाब

मीडिया से सीधे बात न करने के आरोप को नकारते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले छह महीनों में दो लंबे इंटरव्यू दिए हैं। पहले एक न्यूज चैनल को, और अभी एक पत्रिका को। यह सिर्फ संयोग नहीं है कि दोनों ही साक्षात्कारों में रोजगार से जुड़े सवालों पर प्रधानमंत्री के जवाब सबसे ज्यादा चर्चा में रहे। इससे एक बात तो स्पष्ट है कि प्रधानमंत्री रोजगार के मसले पर अपना पक्ष स्पष्ट करने की जरूरत काफी शिद्दत से महसूस कर रहे हैं। पिछले लोकसभा चुनावों के दौरान हर साल दो करोड़ रोजगार देने के उनके वादे ने युवा वोटरों का सबसे ज्यादा ध्यान खींचा था। इस वादे पर वे कितने खरे उतर पाए, दूसरे शब्दों में कहें तो रोजगार के मोर्चे पर उनसे की गई अपेक्षाएं किस हद तक पूरी हुई, इस सवाल का सामना देर-सबेर उन्हें करना ही है।

जाहिर है कि प्रधानमंत्री चाहते हैं, आम लोग विरोधियों की बातों में आएं, उससे पहले ही अपना पक्ष उन तक मजबूती से पहुंचा दिया जाए। इस संबंध में जो बात थोड़ी अटपटी लगती है, वह यह कि रोजगार से जुड़े सवालों का जवाब उन्होंने दोनों बार कुछ और सवालों से ही देना ठीक समझा। मसलन, टीवी चैनल को दिए इंटरव्यू में प्रधानमंत्री ने रोजगार संबंधी सवाल पर कहा, अगर कोई दिन भर ठेले पर पकौड़ा बेचकर शाम को 200 रुपये घर ले जाता है तो उसे रोजगार मानेंगे या नहीं मानेंगे? इसी तरह ताजा इंटरव्यू में प्रधानमंत्री ने कर्नाटक और पश्चिम बंगाल की विपक्षी सरकारों द्वारा दिए गए आंकड़ों का हवाला देते हुए पूछा कि, क्या यह संभव है कि राज्य सरकारें तो रोजगार सृजित करती रहें और केंद्र सरकार रोजगारहीन विकास करें?

ब्रेड रोल बनाने की विधि

ब्रेड रोल बनाने की विधि :

सबसे पहले आलुओं को धो कर उबाल लें। उबालने के बाद इन्हें ठंडा कर लें और फिर छील कर मैश कर लें।

अब कढ़ाई में एक बड़ा चम्मच तेल डालें और उसे गरम करें। तेल गरम होने पर उसमें कटी हुई हरी मिर्च, कद्दूकस की हुई अदरक और धनिया का पाउडर डालें और चलाते हुए भून लें।

मसाला भुनने के बाद कढ़ाई में मैश किये हुए आलू, गरम मसाला पाउडर, अमचूर पाउडर और नमक डालें और हल्का सा भून लें। इसके बाद गैस बंद कर दें और आलू के मिश्रण का ठंडा होने दें।

आलू का मिश्रण ठंडा होने पर उसे होने पर 10 भाग कर लें। इसके बाद एक भाग आलू को लें और उसे हाथ से बेलनाकार आकार में बना लें। इसी तरह आलू के सभी हिस्सों को बेलनाकार बना लें।

अब ब्रेड के किनारे के भूरे वाले भाग को

तेज चाकू से काट कर अलग कर दें। इसके बाद एक बड़े बाउल में पानी लें और उसमें ब्रेड के पीस को भिगो कर निकाल लें। फिर दोनों हथेलियों के बीच भीगे हुए ब्रेड को रख कर दबा दें, जिससे ब्रेड का पानी निकल जाये।

अब ब्रेड के ऊपर एक आलू की बेलनाकार टुकड़ा रखें और ब्रेड को मोड़ते हुए रोल बना लें। इसके बाद के किनारों को अच्छी तरह से दबा कर बंद कर दें। इसी तरह से सारे ब्रेड पीस में आलू भरकर उनके रोल तैयार कर लें।

अब कढ़ाई में तेल डालकर गरम करें। तेल गरम होने पर उसे 2-3 (जितने कढ़ाई में आ सकें) बेड रोल डालें और उलट-पलट कर ब्राउन होने तक तल लें।

लीजिये आपकी ब्रेड रोल बनाने की विधि कम्प्लीट हुई। अब आपके ब्रेड रोल्स **Bread Rolls** तैयार हैं।

इन्हें कढ़ाई से निकाल कर नैपकिन पर रखते जायें। सारे ब्रेड रोल तैयार होने पर इन्हें प्लेट में निकालें और मनचाही चटनी या टोमेटो सॉस के साथ आनंद लें।

साथ ही आप हमारी पॉपुलर ब्रेड डोसा, ब्रेड का हलवा, ब्रेड पोहा, ब्रेड पकोडा, ब्रेड गुलाब जामुन, ब्रेड पिज्जा, दही पापड़ी चाट, वेज हक्का नूडल्स, पोटली समोसा, हरीरा सूप रेसिपी भी ट्राई करें। ये रेसिपी भी आपको जरूर पसंद आएंगी।

शब्द सामर्थ्य

बाएं से दाएं

1. बात, घटना, माजरा, मुकदमा (उर्दू) 3. अलावा, अतिरिक्त 6. प्रेम, इच्छा 7. मां का बच्चे के प्रति प्रेम 8. गलती, जुर्म, गुनाह, दोष 10. मग्न, लीन, खुश, प्रसन्न 12. धनुष, समादेश, फौजी टुकड़ी 13. एक कल्पित पत्थर जो लोहे को छूकर सोना बना देता है 16. हिम्मत, साहस, सामर्थ्य 17. बनावटी, अनुकृति, असली का विलोम 18. अबोध, नासमझ 20. ब्रह्मापुत्र एक प्रसिद्ध हरिभक्त देवर्षि 22. गहरा नीला, काला 23. व्याकुल, बेसब्र 24. मन, चित्त, आदरसूचक तथा सहमति सूचक एक शब्द।

ऊपर से नीचे

1. स्वामी, नाथ 2. बेबस, मजबूर, विवश 3. अन्याय, अत्याचार, जुल्म 4. मध्य एशिया का एक देश 5. पुस्तक 9. बहादुर, वीर 11. सैनिक विद्रोह 12. नीच, अधम 12 ए. प्रणाम, झुकना 13. भरण-पोषण करना, परवरिश करना, छोटा झूला, हिंडोला 14. प्रमाण, प्रमाणिक कथन 15. स्वाभाविक ढंक, योग्यता, लियाकत, सभ्यता और शिष्टता, शऊर (उ.) 19. बिजली, तड़ित 21. रात में दिखाई न पड़ने का नेत्र संबंधी रोग।

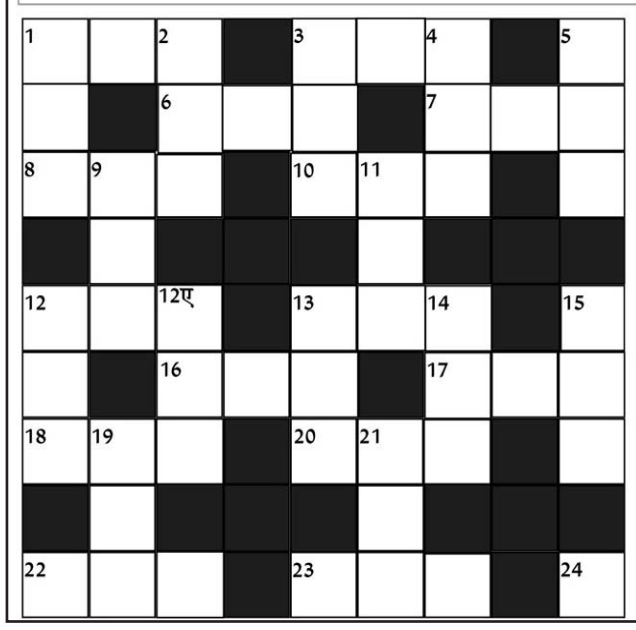

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 58 का हल

प	सं	द	■	सिं	हा	स	न	■
ख	■	म	ज	दू	र	■	का	म
वा	द	क	■	र	■	सं	ब	ल
ड़	■	ल	ज्जा	■	म	स्का	■	य
■	बा	■	■	बि	हा	र	■	■
सु	धा	क	र	■	न	■	■	औ
रं	■	म	■	कि	ता	ब	■	स
ग	■	अ	र	सा	■	हु	ज्ज	त
■	श	क्ल	■	न	मि	त	■	न

सू-दोकू

	1			4			7	
		6	9		2			1
	7			6		8		2
1							8	
	8			5		2		3
3		2			4		1	
	3		2			4		
		8		1	6			7
9			4				2	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र 58 का हल

3	9	6	8	2	5	4	7	1
8	2	5	1	7	4	6	3	9
7	1	4	6	9	3	8	2	5
1	8	9	3	6	7	2	5	4
2	6	7	5	4	8	1	9	3
5	4	3	9	1	2	7	8	6
6	7	2	4	3	9	5	1	8
9	5	1	7	8	6	3	4	2
4	3	8	2	5	1	9	6	7

राशिफल

मेष: आज का दिन मिश्रित फलकारक है। बड़े अधिकारी से अनबन नुकसानदायक हो सकती है। क्रोध पर नियंत्रण बनाए रखें। नए संबंध से भाग्य चमकेगा। सामाजिक सम्मान मिलेगा। दाम्पत्य में सरसता बनी रहेगी।

वृषभ: आप यदि व्यापारी हैं तो आज परिश्रम करना पड़ सकता है। सरकारी नौकर हैं तो वरिष्ठ अधिकारी का कोप भाजन बनना पड़ सकता है। सायंकाल के समय सामाजिक संबंध लाभदायक रहेगा। नई योजना की तरफ ध्यान दें, अचानक लाभ हो सकता है।

मिथुन: आज के दिन लाभ की संभावना है। नौकरी-व्यवसाय से जुड़े कुछ मुद्दे हल हो जाएंगे। कोई भी व्यवसाय छोटा बड़ा नहीं होता, एक बार अनुभव हो जाए तो बस दुनिया अपनी मुट्ठी में ही समझिए।

कर्क: आज आप अपने आप में ही मस्त रहेंगे। किसी भी विरोधी की आलोचना की ओर ध्यान न देकर अपना काम करते रहें। आगे चलकर सफलता आपके कदम चूमेगी। आप अपने सामाजिक क्षेत्र मे मेल-जोल बढ़ाने में कामयाब होंगे।

सिंह: नई उपलब्धियां कड़ी मेहनत से मिलेंगी। सामाजिक उत्तरदायित्व भी बढ़ेगा। किसी अनजान व्यक्ति से आज लेन-देन न करें। अचानक व्यवसाय से संबंधित अतिथि के आ जाने से खर्चा बढ़ सकता है।

कन्या: आज लाभ होगा। स्वजनों से सुख, पारिवारिक मंगल कार्यों की खुशी होगी। रचनात्मक कार्यों में मन लगेगा। ोध पर काबू रखें। घर गृहस्थ की समस्या सुलझ जाएगी। राजकीय मदद भी मिलेगी। सूर्यास्त के समय अचानक लाभ होने के योग हैं।

तुला: समस्याओं के समाधान न मिलने से मानसिक अशांति रहेगी। आर्थिक उन्नति के बहुत सारे अवसर आपको मिलते रहेंगे। कोई युवा व्यक्ति सामने आकर आपकी मदद कर सकता है।

वृश्चिक: आज का दिन उधेड़बुन में व्यतीत हो सकता है। अधिकारी वर्ग से अच्छी सांठ-गांठ बनेगी। किसी सरकारी संस्था से दूरगामी लाभ होगा। निराशा जनक विचारों से बचें। सायंकाल संतान पक्ष से अचानक शुभ समाचार मिल सकता है।

धनु: रूका धन आश्चर्यजनक रूप से प्राप्त हो जाएगा, इससे आज आपका विश्वास धर्म एवं आध्यात्म में बढ़ेगा। रोजमर्रा के कार्यों में कोताही न बरतें। अनुसंधान का लाभ मिलेगा। नए संपर्क से सितारा बुलंद होगा।

मकर: आज कार्यक्षेत्र में अपने से वरिष्ठ अधिकारियों से अनबन हो सकती है। दाम्पत्य जीवन में सरसता बनी रहेगी। पराक्रम वृद्धि से शत्रुओं का मनोबल टूटेगा। दिन के उत्तरार्ध में अचानक अतिथियों के आगमन से व्यय भार बढ़ेगा।

कुंभ: आज गोचर के शुभ प्रभाव से सफलता मिलेगी। उत्तरदायित्व की वृद्धि स्थिरता को जन्म देगी। वाहन भूमि खरीदने, स्थान परिवर्तन का सुखद संयोग भी बन सकता है। सांसारिक सुख भोग व घर गृहस्थी के उपयोग की प्रिय वस्तु खरीदी जा सकती है।

मीन: आज का दिन संतान से जुड़ी समस्याओं को हल करने में व्यतीत हो सकता है। किसी कम्पटीशन में आपकी जीत हो सकती है। किसी खास उपलब्धि से भी आपका मन प्रसन्न रहेगा लेकिन मौसम परिवर्तन का स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है।